एफिल टावर, पेरिस
१५ अगस्त, २००४

संदेश संख्या – ७०

एक शीर्षकहीन संक्षिप्त संदेश

दुनिया केवल चाहना–पाना तथा चिन्ता करना सिखाती है । इसी कारण, तथाकथित जीवन–जीने के नाम पर भोजन, वस्त्र, आवास और कभी–कभार सुख (जिसके साथ दुःख भी जुड़ा होता है) की व्यवस्था करने में ही सम्पूर्ण जीवन व्यर्थ चला जाता है । यह जीवन जीना नहीं है, यह तो मानसिक कैदखाने में घुट–घुट कर केवल दिन काटना है ।

इस मूढ़ जगत में सर्वत्र निर्लिप्त रहते हुए उसकी सम्मति और सनक की चिन्ता किए बगैर उसके प्रति केवल साक्षी भाव में रहें ।

तब 'मैं' के सत्ताबोध और मिथ्याभिमान के अभाव में तथा अहंतुष्टि के लिये संसार द्वारा प्रोत्साहित तनाव एवं संघर्ष से रहित होने के कारण स्वर्ग और पृथ्वी का विस्मय एवं सौन्दर्य–भेद समाप्त हो जाता है ।

तभी प्रेम कृपा स्वरूप प्राप्त होता है जो किसी 'कारण' पर आधारित नहीं है । समाज के 'लेन–देन' के मापदण्ड के आधार पर जिसे आप प्रेम मानते हैं, वह यह प्रेम नहीं है ।

प्रेम या ध्यान में, इसकी सीमा या इसके आनन्द के बारे में भी होश नहीं होता । यदि आप जानबूझकर होश में होते हैं तो आप बाजार जाकर कोई रूमानी उपन्यास या योग या कुण्डलिनी शक्ति के बारे में किसी पुस्तक की खरीददारी में भी लगे रह सकते हैं ।

प्रेम और ध्यान में समय और विचार का कोई स्थान नहीं होता और ऐसा होने पर ''परम'' तत्क्षण घटित हो जाता है । उस ''परम'' का घटित होना कोई साधारण घटना नहीं होती । वस्तुतः यह एक विध्वंसात्मक झलक होता है जो सभी प्रकार की उन्मत्तता, विकार, कल्पना और शरारतों से युक्त चित्तवृत्ति का विस्ङ्गोट कर देता है । इससे शब्दों एवं विचारों के जाल की बदमाशी का पूर्ण विनाश हो जाता है ।

आप जिस तरह लागों के बीच प्रेम नहीं करते, उसी तरह आपको लोगों के बीच ध्यान भी नहीं करना चाहिए । भगवान के लिए, कभी भी समूह में या किसी दूसरे के साथ ध्यान के लिए न बैठें ।

एकान्त और एकाकीपन में ध्यान करें, न कि इच्छा और रूग्ण अनुबंधनों से प्रेरित होकर शब्दों की पुनरावृत्ति द्वारा या किसी विचार का अनुसरण या फिर विचार –परिवर्तन के प्रयास द्वारा ।

आनन्दवन में प्रतापी शेर की भाँति बैठिए ।

ध्यान और प्रेम वस्तुतः माँ काली है । 'काली' शब्द का वास्तविक अर्थ है–काल अर्थात् समय का अन्त हो जाना । यदि ध्यान नहीं होता है तो फिलहाल पर्याप्त लाहिड़ी क्रिया–प्राणायाम करें (या, यदि आप अपने क्रिया–जीवन में ठोकर–क्रिया के सोपान तक पहुँचे हैं तो खूब लाहिड़ी ठोकर क्रिया करें ।)

लाहिड़ी प्रक्रिया में श्रद्धा रखें ।
माँ काली